शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 दिसम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी के विविध रूप

डॉ.मनोरमा गौतम
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन साहित्यकारों में चित्रा मुद्गल का नाम सर्वोपरी है। चित्रा मुद्गल एक ऐसी रचनाकार हैं, जिन्होंने अपने समाज, अपने परिवेश की कभी उपेक्षा नही की। उन्होंने अपने आसपास के समाज में जो देखा, भोगा या अनुभव किया उसे जस का तस अपने साहित्य में उकेर दिया। उनकी कहानियाँ मात्र कहानी भर नही हैं, बल्कि समाज का ऐसा आईना है, जो समाज के यथार्थ को दिखाती है। उनकी कहानियों के पात्र सिर्फ अपने चरित्र को ही बयां नही करते, बल्कि समाज में व्याप्त हर उस शख्स के चरित्र को भी दर्शाते हैं जो कहीं न कहीं समाज की गतिविधियों में अपना योगदान देते हैं। उनकी कहानियों में व्याप्त घटनाएं, स्थितियां तथा परिस्थितियां किसी एक व्यक्ति या समुदाय से सम्बन्धित नही होतीं, बल्कि सम्पूर्ण समाज से जुड़ी होती हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में चित्र मुद्गल की कहानियों में नारी के विविध रूपों पर विचार किया गया है।

भूमिका

चित्रा मुद्गल के नारी विषयक दृष्टिकोण को देखा जाए तो स्वयं नारी होने के नाते नारी के प्रति उनका झुकाव या लगाव कोई असामान्य बात नही है। यह एक स्त्री होने के नाते स्त्री का स्वाभाविक गुण है, जोकि सहज ही है। यदि बात की जाए चित्रा मुद्गल की कहानियों में नारी पात्रों की तो उनकी कहानियों के नारी पात्र अपने हर रूप फिर चाहे माँ, पत्नी, बहिन, बेटी, प्रेमिका हो अपने उत्तरदायित्व को निभाती नजर आती है। उनकी कहानियों के नारी पात्र परिस्थितियों तथा समस्याओं को अपनी किस्मत मानकर चुप बैठने वाली नही हैं। समस्याओं को सहजता से नहीं स्वीकारती, बल्कि उनका डटकर सामना करती हैं। उनकी कहानियों से स्त्रियों को संघर्ष की प्रेरणा मिलती है। ये संघर्षशील पात्र समाज में मौजूद हैं। चित्र मुद्गल की पारखी दृष्टि उन्हें अपनी कहानियों में शामिल कर लेती हैं। उनकी कहानियों में स्त्री में बेचारगी का भाव नहीं है। वे उनके भीतर की आदमी जीजिविषा को उजागर करती हैं।

कहानियों में नारी के विविध रूप

चित्रा मुद्गल की कहानी 'गिल्टी रोजेस' की पात्र दुखना भी साहसी नारी है, जो स्वयं की इज्जत बचाने के लिए बलात्कारी की हत्या कर देती है और स्वयं को पुलिस के हवाले भी कर देती है। उसके बारे में बताते हुए लेखिका कहती हैं "बहुत उकसाने पर जबान खोली दुखना ने - हमने ए सौत की पाँच औलादों में से बच रहे इकलौते जवान बेटवा को छुरा भोंक मार दिया। न भौंकते तो उस जल्लाद से अपनी लाज, लज्जा कैसे बचाते ? भरी दोपहरी वो हमको कोठरी में खींच, सांकल चढ़ा, भूमि पर पटक दिया, छूटने को छटपटाते हम चीखते-चिल्लाते रहे। कोऊ न सुना। सुनते काहें ! सौत और ससुर की शह थी उसको। पहली बेर क्षमा कर दिए। दूजी, तीजी बेर की

जबरई पर गम खाके मुंह-सी लिए। समझाए - रिश्ते में हम तेरी महतारी हुए तेरे बाप की दूसरी ब्याही नई धार करके आया हंसुआ कोठरी में एक और लगी भडियों के पीछे लुका दिया। जैसे ही बेटवा ने भूमि पर हमको पटकने की कोशिश किया बस झेला नही गया। बिजली की फुर्ती से हंसुआ उठाया और जब तक वो संभले, रेत के धर दी हरामी की गटई। कबूल लिए जुर्म पुलिस दरोगे के सामने।"[1]

आज समय बहुत तेजी से बदल रहा है। समय के साथ-साथ लोगों की सोच भी बदलती जा रही है, जिसका प्रभाव मानवीय रिश्ते पर भी पड़ा है। आज लोगों के भीतर की मानवता खत्म होती जा रही है। आज रिश्ते-नातों की परिभाषा भी बदलती जा रही है। आज अपने ही घर में लड़कियां सुरक्षित नही हैं। अपने ही पिता-भाई द्वारा उनकी इज्जत लूटी जा रही है या इज्जत का सौदा किया जा रहा है। आए दिन लड़कियां बलात्कार की शिकार हो रही हैं। चंद पैसों के लिए उनके अपने सगे सम्बन्धी ही उनका सौदा कर रहे हैं। आज रिश्तों के मायने ही बदल गए हैं। ऐसे में हर माँ तथा हर औरत के मन में एक डर बैठ गया है आखिर कैसे अपनी बेटियों को सुरक्षित रखें ? कैसे उन्हें एक निर्भय जीवन दे पायें। चित्रा मुद्गल की कहानी 'गिल्टी रोजेस' की पात्र गुनाबाई भी एक ऐसी माँ है जो अपनी बेटियों के सुखद भविष्य की कामना करती है, उन्हें पढ़ा-लिखा कर एक अच्छा जीवन देना चाहती है। वह अपने शराबी पति द्वारा अपनी बेटी से देह व्यापार करवाने पर उससे लडती है, किन्तु अपनी बेटियों को देह के बाजार में नही धकेलना चाहती। इसके लिए उसे अपनी तथा अपनी बेटियों को जिन्दा जलाना ही सही लगता है। और वह यह कदम भी उठाती है। जिसमें उसकी बेटियां तो मर जाती हैं किन्तु वह जीवित बच जाती है नर्क भोगने के लिए। लेखिका कहती है, "पति की ज्यादतियां सहती-झेलती चली आई तो बस इस इंतजार में कि उसकी बेटियां पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर हो जाएँ तो उसकी नियति बदल जाए। बदल सकती है उसकी नियति ? लेकिन पति के जीवित रहते तो कदापि नही ? कितना लड़ेगी वह ? कब तक लड़ेगी ? आज उस दुस्साहसी ने बड़ी बेटी की कमाई खाई है। मुंह में खून लग गया, छोटी बेटियाँ बच पाएंगी क्या?"[2]

भारतीय समाज में आज भी पुरुष स्त्रियों को अपनी संपत्ति ही मानता है। उसे उसकी देह की परिधि से आगे देखना ही नही चाहता। यदि कुछ अपवादों को छोड़ दिया जाए तो आज भी समाज में ऐसे पुरुष विद्यमान हैं जो अपनी मर्दानगी या पुरुषत्व का परचम लहराने के लिए स्त्री की देह को ही चुनते हैं। अगर स्त्री उसके प्रेम को या उसके अनुनय को अस्वीकार कर देती है तो वह उसे अपने अहं पर चोट के रूप में लेता है। उसके इंकार को वह अपनी हार मान उससे बदला लेना चाहता है। आज पुरुष ने एक फार्मूला बना लिया है 'यदि मेरी नही तो फिर किसी की नही' और इसके तहत वो स्त्री की हत्या कर देता है या फिर तेजाब आदि फेंककर उसका चेहरा, शरीर आदि जला देता है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'जोंकें' में पुष्पा के साथ भी ऐसा ही होता है। उसके ऊपर भी ऐसे ही किसी सिरफिरे आशिक के द्वारा तेजाब फेंक दिया जाता है। "अंदेशा नही था सतीश के दुस्साहस का। मामूली से डिलीवरी बॉय की इतनी हिम्मत? पुष्पा का गंदुली गोल सलोना चेहरा - उफ्फ - देखूंगी तो किस हालत में पाऊँगी बच्ची को। सीने से गौरैया-सी आ दुबकने वाली। माँ न बन पाने के लिए अभिशप्त

मेरी छाती उसके सीने से जुड़ते ही लबालब तलैया-सी उतरा आती। पुष्पा के साथ हुई अनपेक्षित क्रूरता इस बात का प्रमाण है कि वह बच्ची मुझसे किए गए वादे पर दृढ़ता से कायम रही, किन्तु शायद मैंने उसके साथ होने के उसके भरोसे को तोड़ दिया है।"[3]

यदि बात की जाए निम्न वर्ग के परिवारों की लड़कियों की तो ऐसा नही है कि निम्न वर्ग की लड़कियां पढ़ना नहीं चाहती हैं। वे भी पढ़-लिखकर कुछ बनना चाहती हैं। समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाना चाहती हैं। आत्मनिर्भर बनकर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारना चाहती हैं, किन्तु उनकी विवशता है कि उनके पास पैसे नही हैं कॉपी-किताब खरीदने के लिए तथा स्कूल की फीस भरने के लिए। ऐसे ही एक निम्नवर्गीय गरीब लड़की पुष्पा की पढाई के प्रति रूचि है। लेखिका 'जोंकें' में पुष्पा के बारे में बताते हुए कहती हैं "पुष्पा से मिलवाते हुए विद्या जी अतिरिक्त उत्साह से भर आई। आठवीं कक्षा की मेधावी छात्रा है पुष्पा। ऊंची पढाई पढ़ने की इच्छुक। रद्दी खरीदने और बेचने वाले के घर से आती है। अड़चनें कम नहीं हैं, घरवाले इसके हांथ पीले करने की फ़िराक में हैं। उनका तर्क है सरकार चाहती है लड़कियाँ पढ़ें, सो बहुत पढ़ ली छोरी। भाँवरें सरकारें डलवाने से रहीं। ऊपर से चार किलास पढ़कर अपने को वेदज्ञाता समझ बैठी हैं। चौका बासन कमाने को राजी नही। दफ्तर में काम करेगी। कुछ कहो तो मुंह लड़ाती है करमजली।"[4]

आज 21वी सदी में भी जहाँ स्त्रियों से ये उम्मीद की जाती है कि वे शादी करके अपनी घर-गृहस्थी बसा कर बच्चे पैदा करे और अपने पारिवारिक जीवन के उत्तरदायित्व का निर्वहन करे। किन्तु आज स्त्रियों ने समाज की इस मानसिकता को गलत साबित कर दिया है और समाज की उस बनी बनाई परिपाटी को तोडा है जहाँ स्त्रियों को कम आंका जाता है। आज स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में पुरुष से कम नही हैं। वे खुलकर समाज में सभी कार्य कर रही हैं जो उन्हें उचित लगता है या फिर समाज के हित में है। आज स्त्रियाँ समाज की सेवा में अपना पूरा जीवन लगा रही हैं। वे अपने हित को पीछे कर समाज के हित में कार्य कर रही हैं। बहुतसी स्त्रियाँ नारी संस्था, नारी कल्याण समिति तथा एनजीओ आदि से जुडकर नारी के उत्त्थान में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर रही हैं। चित्रा मुद्गल की कहानी 'नतीजा' ऐसी ही नारी का वर्णन करती है जो अपना सर्वस्व जीवन नारी जाति की भलाई में लगा देती है। पूरबी के इस समाजसेवी रूप के बारे में बताते हुए लेखिका कहती है "पूरबी दी ने न घर-संसार बसाया, न केतकी दी ने उन्हें कभी ब्याह न करने और स्वयं का घर-परिवार न रचने-गढ़ने पर बिलखते-संतप्त होते ही पाया। बस एक ही धुन उनके सिर रात-दिन चढ़ी दिखी। देह व्यापार में लिप्त मजबूर स्त्रियों की संतानों को विशेष रूप से लड़कियों को उस नरक से बाहर खींच उन्हें भविष्य की समर्थ, दक्ष, विवेकपूर्ण, आत्मनिर्भर स्त्री बनाना है, जो अपने होने का रजिस्टर स्वयं आप बने।"[5]

समाज में जहाँ एक ओर ऐसी स्त्रियाँ हैं जो अपने साथ हो रहे अन्याय को अपनी नियति मान सब कुछ चुपचाप सहन करती रहती हैं, किन्तु वही दूसरी ओर ऐसी स्त्रियाँ भी हैं जो अपने साथ तो क्या दूसरों के साथ भी हो रहे अन्याय के खिलाफ लड़ती हैं। समाज में जहाँ भी गलत होते देखती हैं, उसका विरोध करती है। 'नतीजा' कहानी की पात्र पूरबी एक ऐसी ही साहसी, बहादुर, निडर तथा आत्मविश्वासी महिला

है जो समाज की दकियानूसी मानसिकता के आगे घुटने नही टेकती। "पूरबी दी का ही जिगरा था कि कानून और सरकार दोनों को नंगा कर कटघरे में ला पटका उन्होंने। लिखित आदेशों के समक्ष झुकना लाचारी थी प्रिंसिपल की। पूरबी दी का हठ था। बच्चियाँ सामान्य स्कूलों में सामान्य बच्चों के बीच उनके साथ ही पढ़ेंगी।"[6]

आज के उत्तर आधुनिक युग में अगर स्त्री-पुरुष दोनों मिलकर कमाएंगे तो ही वे अच्छा जीवन जी पाएंगे और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा तथा अच्छा भविष्य दे पाएंगे। आज की नारी स्थिति को समझते हुए पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नौकरी कर रही है और घर में अपना आर्थिक सहयोग दे रही है। यानि आज की नारी घर और बाहर दोनों उत्तरदायित्वों को एक साथ निभाती है और निभा भी रही है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'तकिया' की नायिका शिप्रा मिश्रा भी एक ऐसी ही नारी है जो घर और दफ्तर दोनों दायित्वों को एक साथ निभाती है। "घर केवल उनकी कमाई से चल सकता। शहर में रहना है तो इन्ही स्थितियों में बच्चा पैदा करना होगा और उसे पलना-पोसना भी नौकरों या क्रेच के भरोसे। नियम बना लिया था उसने सुबह दफ्तर निकलने से पहले मोनू की मालिश कर उसे नहला-धुलाकर काजल टीका करके ही निकलती। रात मालिश करके ही सुलाती। नुन्नू में तेल टपकाना न भूलती, न सुलाते हुए लोरी गाना, नन्हीं परी सोने चली हवा धीरे आना।"[7]

आज लड़कियाँ डॉक्टर, इंजीनियर, वकील, टीचर, आईएस, कलेक्टर, ऑफिसर, वैज्ञानिक क्या-क्या नहीं बन रही हैं। कौन-सा ऐसा क्षेत्र बचा है जहाँ तक उनकी पहुंच नही है लेकिन इन सबके लिए उन्हें बहुत लम्बी लड़ाई लड़नी पड़ी है, तब कहीं जाकर उन्होंने ये अधिकार पाया है। आज की आत्मनिर्भर नारी अपने पैरों पर खड़ी होकर अपना भाग्य स्वयं लिख रही है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'आंगन की चिड़िया' की पात्र दीवू स्वावलंबी तथा मेहनती लड़की है। वह उच्च शिक्षा ग्रहण कर अच्छी कम्पनी में जॉब कर अपने अस्तित्व को निखारती है। समाज में अपने दम पर अपनी एक अलग पहचान बनाती है। लेखिका उसके स्वभाव के बारे में बताती हुई कहती है कि "एमबीए पास करते ही होस्टल से सामान उठाया नही था कि सूचना मिली कि एक अमेरिकन साफ्टवेयर कम्पनी में दीवू को साढ़े तीन लाख रूपए सालाना की नौकरी लग गई है । हालांकि साल भर का प्रोबेशन पीरियड है।"[8]

आज के युग में व्यक्ति सिर्फ खान-पान तथा पहनावे के स्तर पर ही नही बदला है बल्कि वैचारिक स्तर पर भी बदला है। समाज में हो रहे बदलाव को सिर्फ पुरुषों ने ही नहीं बल्कि स्त्रियों ने भी सहर्ष स्वीकारा है। आज की लड़कियाँ माडर्न कपड़े पहन रही हैं, क्लब तथा बार में जा रही हैं, शराब पी रही हैं, बॉयफ्रेंड बना रही हैं, अपने अनुसार जीवन जी रही हैं। स्त्री ने वैवाहिक सम्बन्धों को नाकारा है। वह बिना विवाह किए भी पुरुषों के साथ एक ही छत के नीचे लिव इन में रह रही हैं। कहानी 'आँगन की चिड़िया' की दीवू भी ऐसे ही स्वतंत्र विचारों वाली लड़की है जो आज के समय के अनुसार जीवन जीती है। वह पुराने विचारों तथा पुरानी मान्यताओं को नहीं मानती है और अपने लिव इन रिलेशन में रहने वाली बात को भी स्वीकारती है। वह अपनी माँ से अपने लिव इन रिलेशन के बारे में बताते हुए कहती है, "दीवू ने तनिक विनीत हो आए स्वर में उन्हें संबोधित किया - माँ मैं तुम्हें और पापा को बताने की अब तक हिम्मत नही संजो पाई। कई बार कोशिश की मगर सच तो यह है

कि इतने बड़े शहर में अकेले रहना मुश्किल है किसी भी लड़की के लिए। हमने और विकी ने बिना फेरों के साथ रहने का निश्चय किया है - हम इस इंतजार में थे - अब तुम आ गई हो तो हमारे संबंधो पर स्वीकृति की मुहर लग जाएगी।"[9] स्वतंत्र विचार की होने के बाद भी महिला को पुरुष की दरकार रहती है।

आज का समय तेजी से भाग रहा है। यदि हम उसकी गति को नही पकड़ पाएंगे तो पिछड़े हुए कहलायेंगे। इसलिए जरुरत है समय के साथ चलने की। वक्त की रफ़्तार के साथ चलना आज की नारी ने भी सीख लिया है। अब वह जमाना गया जिसमें माता-पिता जिस लडके के साथ बेटी को बाँध देते थे लड़कियाँ उसे ही अपना भाग्य मान जीवन भर उस रिश्ते को ढोती थीं। आज स्थिति बदल गई है। नारी जोर-जबरदस्ती के रिश्ते को नहीं ढोती। यदि पति के साथ उसकी नहीं बनती है तो वह उससे तलाक लेकर अलग हो जाती है। चित्रा मुद्गल की कहानी 'पेंटिंग अकेली है' की नारी भी ऐसा ही करती है। वह पति-पत्नी के ख़राब रिश्ते को जबरदस्ती ढोने की अपेक्षा उस रिश्ते को खत्म कर देना ही उचित समझती है। उसके चरित्र का उलेख करते हुए चित्राजी लिखती हैं, "जे के तीन बच्चे थे। तीनों को वह अपने साथ लेकर आई थी। दो बेटे और एक बेटी। तेरह वर्ष में तीन तलाक 'जे' के खाते में दर्ज थे। दो बड़े फ्लैटों की मालकिन थी। जीवन पर्यंत कमाती, तब भी अपने बूते दो बड़े शहरों में बड़े फ़्लैट बना पाना उसके लिए मुश्किल था। औरत की योनि और कोख ने उसे इतनी बड़ी संपत्ति का हक़दार बनाया था। बस ! हमारे यहाँ की मूर्ख औरतें इस गुर से नावाकिफ हैं या उनमें साहस की कमी है। शायद इसी वजह से हिंदुस्तानी मर्द अपना खेल बनाए हुए हैं"[10]

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि चित्रा मुद्गल की कहानियों की नारी पात्र हर रूप में अपने उत्तरदायित्व को निभाती नज़र आती हैं। उनकी कहानियों में जहाँ एक ओर स्त्री पत्नी बनकर सिर्फ अपना तन-मन ही नहीं बल्कि अपना सम्पूर्ण जीवन अपने पति तथा परिवार पर न्योछावर कर देती है, तो वहीं माँ बनकर अपना सम्पूर्ण ममत्व अपनी औलाद पर लुटा देती है, तो कभी बेटी बनकर परिवार तथा कुल की मर्यादाओं को कायम रखती है, तो कभी प्रेमिका बनकर अपने प्रेमी को अपने प्रेम से सराबोर कर देती है, तो कभी समाज सेविका बन समाज के लिए स्वयं को समर्पित कर देती है। किन्तु इन सबके बावजूद उसे समाज में वह स्थान नही मिला है जिसकी वह हकदार है। उसे हमेशा अपने अधिकार तथा अपने सम्मान के लिए संघर्ष करना पड़ा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 गिल्टी रोजेस, चित्रा मुद्गल
2 गिल्टी रोजेस, चित्रा मुद्गल
3 जोंकें, चित्रा मुद्गल
4 जोंकें, चित्रा मुद्गल
5 नतीजा, चित्रा मुद्गल
6 नतीजा, चित्रा मुद्गल
7 तकिया, चित्रा मुद्गल
8 आँगन की चिड़िया, चित्रा मुद्गल
9 आँगन की चिड़िया, चित्रा मुद्गल
10 पेंटिंग अकेली है, चित्रा मुद्गल